समस्या-समाधान

समस्या- मुझे पपेन उत्पादन के लिये उपयुक्त किस्मों के बारे में बतलायें.

- लोकेश कुमार, पिपरिया

समाधान- आप पपीते से पपेन निकाल कर बेचना चाहते हैं इसके लिये प्रशिक्षण भी लेना चाहते हैं. पपेन के लिये विशेष जाति का होना जरूरी नहीं है.परंतु कुछ मापदंड हैं जिन्हें यदि समझकर कार्य किया जाये तो अच्छा होगा जैसे-

फलों का चुनाव- पूर्ण विकसित आयताकार फलों से माह अक्टूबर में अधिक पपेन निकाला जा सकता है. यदि फलों पर चीरा लगाने के पहले 200 पी.पी.एम. इथियान (बाजार में मिलता है) का छिड़काव कर दिया जाये तो अच्छी मात्रा में पपेन मिल सकता है.

● 90 से 100 दिनों के पपीते सबसे अच्छा पपेन देने में सक्षम होते हैं दूध सुबह 6 से 8 बजे के मध्य ही निकालें.

किस्में : पूसा डेलिसियस, पूसा मैजेस्टी, पूसा जॉयंट, पूसा ड्वार्फ, पूसा नन्हा, कुर्ग हनीड्यू, वाशिंगटन, पंत-1, सी.ओ.-1, सी.ओ.2, सी.ओ. 4, सी.ओ. 5, सी.ओ. 6, ताइवानी, पी.के. 10, पेन-1.

किसानों के लिये सुविधाएं

एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन तथा उर्वरक का संतुलित प्रयोग

समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन एवं उर्वरकों के संतुलित व समन्वित उपयोग द्वारा भूमि के स्वास्थ्य को बनाये रखते हुये दीर्घकाल तक टिकाऊ उत्पादन प्राप्त करने के लिये विभाग द्वारा ये योजना पूरे प्रदेश में संचालित है।

पात्र हितग्राही - अनुसूचित जाति/लघु सीमांत/महिला कृषक एवं सामान्य श्रेणी के कृषक.

हितग्राही चयन- कृषि स्थायी समिति के अनुमोदन अनुसार.

अनुदान व प्रशिक्षण प्रावधान

स्वाइल बेस्ड बी.जी.ए. कल्चर - लागत का 25 प्रतिशत अथवा रुपये 1000 प्रतिशत क्विं., जो भी कम हो, अनुदान देय है।

हरी खाद बीज वितरण - लागत का 25 प्रतिशत अधिकतम रुपये 1000 प्रति क्विंटल अनुदान देय है.

वर्मी कम्पोस्टिंग पिट - लागत का 25 प्रतिशत अधिकतम रुपये 1000 प्रति पिट, अनुदान देय है.

कृषक प्रशिक्षण - विकासखंड स्तर पर 30 कृषकों के लिये एक दिवसीय प्रशिक्षण हेतु रुपये 6000 प्रति प्रशिक्षण का प्रावधान.

मिट्टी परीक्षण एवं उर्वरक गुण नियंत्रण प्रशिक्षण - 20 कृषक, 20 प्रसार कार्यकर्ता एवं 10 उर्वरक विक्रेताओं के लिये एक दिवसीय प्रशिक्षण हेतु रुपये 5000 प्रति प्रशिक्षण का प्रावधान है.

मृदा स्वास्थ्य कार्ड - किसानों द्वारा मिट्टी परीक्षण हेतु बारम्बार प्रदत्त मिट्टी नमूनों के विश्लेषण की जानकारी मृदा स्वास्थ्य कार्ड में किसानों के पास रहती है। ये कार्ड मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला द्वारा किसानों को नि:शुल्क दिया जाता है.

हस्तचलित निंदाई यंत्र

- उच्च भूमि में कतारबद्ध बोई गई फसलों की निंदाई तथा गुड़ाई करता है.
- अन्य निंदाई यंत्रों की अपेक्षा इस यंत्र से कम समय में ज्यादा क्षेत्र की निंदाई की जा सकती है.
- यंत्र की निंदाई दक्षता उच्च है एवं फसल के कतारों के बीच खरपतवारों को काटता और उखाड़ता है तथा मृदा पलवार की प्राप्ति भी होती है.
- समय पर निंदाई द्वारा फसल की अधिक उपज प्राप्त होती है. पारम्परिक मानव चलित निंदाई यंत्रों की अपेक्षा 90 प्रतिशत तक समय की बचत होती है.
- यंत्र का भार कम है, निंदाई हेतु कम श्रमिकों की आवश्यकता होती है, कड़े श्रम में कमी होती है और प्रचालन भी सरल है.
- यंत्र पर कीमत का 25 प्रतिशत अनुदान देय है.

खरीफ प्याज : आय का उत्तम साधन

खेत की तैयारी : पौध रोपाई के लिए खेत की अच्छी तरह से 2-3 जुताइयां करके समतल बनाकर क्यारियों एवं नालियों में बाँट देते हैं. इससे पहले 15 टन प्रति एकड़ के हिसाब से सड़ी हुई गोबर खाद मिट्टी में पौध रोपाई के पहले भली-भांति मिला देते हैं, रोपाई के एक-दो दिन पहले 40 किलोग्राम यूरिया, 120 किलोग्राम सिंगल सुपर फास्फेट तथा 40 किलोग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश को प्रति एकड़ के हिसाब से मिट्टी में मिलाकर समतल कर देना चाहिए.

किस्में : पूसा रेड, निफाड-53, एग्री फाउंड व्हाइट, पूसा व्हाइट फ्लेट, पूसा व्हाइट राउंड, पूसा माधवी, एग्रीफाउंड लाइटरेड.

पौध की रोपाई एवं देखभाल : पौध की रोपाई अगस्त के प्रथम पखवाड़े के दौरान करते हैं. पौध की रोपाई 15 से.मी. की दूरी पर कतारों में 10 से.मी. के अन्तराल पर करते हैं. बासालिन खरपतवारनाशी की 400 मिली मात्रा 300 लीटर पानी में मिलाकर खेत में रोपाई के समय छिड़काव करते हैं, इसके अलावा 2-3 निराई की आवश्यकता होती है, जिसे हाथों से खुर्पी के द्वारा करना चाहिए, जिससे साथ ही हल्की गुड़ाई भी हो जाती है. वैसे अगस्त से अक्टूबर के बीच में लगभग 8-10 दिन के अन्तराल पर बरसात न होने पर सिंचाई की जाना चाहिए.

खुदाई एवं प्याज सुखाना : प्याज की फसल लगभग 5 महीने में खुदाई के लायक तैयार हो जाती है. गांठों की खुदाई नवंबर-दिसम्बर में की जाती है. कम तापमान होने के कारण पौधे पूर्णतया सूख नहीं पाते हैं, इसलिए जैसे ही गांठे अपने पूरे आकार की हो जाए, उनकी खुदाई कर लेना चाहिए. खुदाई के लगभग 10 दिन पहले से ही सिंचाई बंद कर देना चाहिए, जिससे गांठें सुडौल व ठोस हो जाएं. खुदाई के बाद इन्हें पंक्तियों में रखकर पत्तों के साथ सुखाते हैं.

उपज : अच्छी किस्म की बुआई एवं अच्छी फसल से प्रति एकड़ लगभग 100 क्विंटल प्याज की उपज प्राप्त की जा सकती है.

तीन कतारी बीज एवं उर्वरक बुआई यंत्र

यह एक पशुचलित सरल, हल्के भार वाली मशीन है जिससे गेहूं, चना, ज्वार, सोयाबीन, मूंग, मसूर, अरहर, सूर्यमुखी, कुसुम आदि के बीज एवं उर्वरक को सिंचित काली मिट्टी क्षेत्र में बोया जा सकता है. फ्लूटेड रोलर युक्त मापक प्रणाली जो इकाई में लगाई गई है, चेन तथा दांतेदार पहिया के माध्यम से 300 मिली. व्यास वाले प्रचालन पहिये द्वारा चलाई जाती है. शू प्रकार का कूड बनाने वाला, जिसमें बिना अवरोध वाला बूट लगाया गया है, जो बीज को चाही गई गहराई तक डालता है.

पूर्ण पता भेजें

आत्मा संदेश के पाठकों से अनुरोध है कि आपको आत्मा संदेश सुनिश्चित रूप से मिलता रहे इसलिए अपना पूर्ण पता नीचे दिए प्रारूप में हमें भेजें.

नाम ______________________

पिता का नाम ______________________

ग्राम __________ पोस्ट __________ पिन __________

जिला __________________ फोन __________

कृषक जगत

14, प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल. फोन : 0755-3013605

सुझाव भेजें

आपको हमारा यह अंक कैसा लगा. आत्मा संदेश का यह अंक विशेष रूप से किसान मित्र, किसान दीदी के लिए संजोया गया है. पाठकों से निवेदन है कि कृपया अपने सुझाव हमें इस पते पर लिख भेजिये. आपके सुझावों का इंतजार रहेगा.

समन्वयक
के.जे. एजुकेशन सोसायटी
14, प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल
फोन : 0755-3013605 Email : info@krishakjagat.org

संचालक
किसान कल्याण तथा कृषि विकास
विंध्याचल भवन, भोपाल फोन : 0755-2551336,
फैक्स : 2572468 Email : diagri@mp.gov.in

सम्पादक : संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, विन्ध्याचल भवन, भोपाल (म.प्र.) फोन : 0755-2551336 एवं समन्वयक- के.जे. एजुकेशन सोसायटी, भोपाल द्वारा आत्मा परियोजना में संयोजित, फोन : 0755-3013605
E-mail : info@krishakjagat.org वि.फी.

मध्यप्रदेश शासन

आत्मा संदेश

के.जे.एजुकेशन सोसायटी

किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग म.प्र. की नवोन्मेष प्रस्तुति वर्ष-3 अंक - 8 जुलाई 2010

संचालक की कलम से.............

खरीफ की बुआई गम्भीरता से करें

चार दशक पहले खरीफ में अधिकांश रकबा खाली पड़ा रहता था और 700 से.मी. से लेकर 1200 से.मी. तक वर्षा निरंकुश खेतों से लाखों टन उपजाऊ भूमि अपने साथ बहाकर ले जाती थी. धीरे-धीरे कृषि ने करवट बदली, सिंचाई के छोटे मध्यम तथा विशाल बांध तैयार किये गये जिनमें नदियों का जल संचय किया जाने लगा और उसका उपयोग कृषि में करके उत्पादकता दोगुनी तक हो गई. फसल सघनता 100 प्रतिशत से बढ़कर 200 और आंशिक क्षेत्रों में 300 प्रतिशत तक आज देखी जा सकती है. कृषि के इस क्रांतिकारी इतिहास को हरितक्रांति का नाम दिया गया जिसने कृषि से जुड़े व्यवसायों को प्रभावित करके श्वेत तथा नीली क्रांति भी हमें दिखलाई. संसाधनों की उपलब्धियों ने कृषि की गाड़ी में जायद का डिब्बा भी जोड़ दिया. जिसमें कद्दूवर्गीय फसलों के अलावा मूंग, उड़द, मूंगफली, सूर्यमुखी, भिंडी तथा अन्य दलहनी सब्जी जैसे लोबिया, खीरा, ग्वारफली, टमाटर, मिर्च भरी गरमी में बाजार में उपलब्ध करायी अन्यथा करेला, गिलकी,कद्दू, कुंदरू के दर्शन ग्रीष्मकाल में दुर्लभ थे केवल आलू से काम चलाया जाता था. यह क्रम साल दर साल से चल रहा है. तभी तो हम बढ़ती जनसंख्या का बोझ उठा सके. आज फिर हम खरीफ की दहलीज पर खड़े हुए हैं. कुछ जिलों में बरसात अच्छी हो चुकी है, वहां पर सोयाबीन की बुआई चल रही है तो कहीं बोने लायक पानी भी नहीं गिरा है। जहां पानी कम गिरा है। वहां नमी सरंक्षण के उपाय किये जाये तथा शुद्ध सोयाबीन की जगह मूंग, उड़द, अरहर की अंतरवर्तीय फसल लगायें बाजरा कोदो, कुटकी, रागी का रकबा बढ़ायें, जो कम पानी में भी अच्छी पैदावार देने में सक्षम है। मिश्रित खेती पशुपालन, बकरीपालन, मशरूम, मधुमक्खी पालन का विस्तार आपकी आवश्यकता होगी। प्रदेश के विभिन्न जिलों में वर्षा की स्थिति को देखते हुए आकस्मिक कार्य योजना अवश्य बनायें जिसमें फसलों का चयन, वर्षा की स्थिति को देखते हुए किया जाय ताकि उत्पादन, क्षेत्र पर कोई असर न पड़े.

आपका

डी.एन. शर्मा

संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास (म.प्र.)

आपकी फसल की खुराक कौन चुरा रहा है?

खरपतवारों का फसल की पैदावार पर विपरित असर पड़ता है. खेतों में उगने वाले खरपतवार पोषक तत्व तथा पानी को भी फसल की अपेक्षा अधिक उपयोग करते हैं. जिससे खेती की लागत बढ़ जाती है. इन खरपतवारों का समय पर नियंत्रण यंत्रों द्वारा किया जाता है. इसके साथ ही बुवाई उपरांत कुछ खरपतवारनाशक रसायनों के प्रयोग से भी इनका नियंत्रण किया जा सकता है.

सोयाबीन की कम उपज होने के अनेकों कारण हैं -

● किसानों द्वारा सोयाबीन की फसल में निंदाई, गुड़ाई हेतु मजदूर समय पर न उपलब्ध होने के कारण नींदा नियंत्रण सही समय पर न करना.

● सोयाबीन में नींदानाशियों के प्रयोग की समुचित जानकारी न होने के कारण किसान भाई अपनी सुविधानुसार कभी भी और कैसे भी नींदा नियंत्रण करते रहते हैं या फिर फसल को ऐसा ही छोड़ देते हैं. परिणाम स्वरूप बहुत कम उपज प्राप्त होती है.

● कभी-कभी फसल नींदा नियंत्रण के अभाव में पूर्णत: नष्ट हो जाती है और किसानों को सोयाबीन की खेती से असाधारण हानि होती है. इसलिये किसान भाई यहां दिये गये उपायों को अपनाएं और सोयाबीन की उत्पादकता में वृद्धि करें.

यंत्रों से खरपतवार नियंत्रण -

● मध्यप्रदेश की मिट्टी काली होने पर तथा कभी-कभी लगातार वर्षा होने पर खेत में घुसना मुश्किल हो जाता है.

● सोयाबीन की फसल में बुवाई के 15-20 दिन के बाद एक निंदाई-गुड़ाई करना आवश्यक है. यह उन्नत कृषि यंत्रों से करना चाहिये जिससे समय एवं श्रम की बचत होती है.

● काली मिट्टी में नमी सुरक्षित रखना भी आवश्यक है अत: हाथ से चलने वाले वीडर या ट्रैक्टर से चलने वाले स्वीप टाइप वीडरों का ही प्रयोग करना चाहिये.

ट्रैक्टर चलित वीडर -सोयाबीन से खरपतवार शीघ्र ही निकालने हेतु राष्ट्रीय सोयाबीन अनुसंधान केन्द्र ने ट्रैक्टर चलित दो वीडरों का विकास किया है. एक वीडर

में मुख्य रूप से स्वीप का प्रयोग किया गया है जो कि सोयाबीन में लाइन में खरपतवार नष्ट कर देती है तथा लाईनों में बोई गई फसल में मिट्टी भी चढ़ाती है व नमी सुरक्षित रहती है. पीछे केज व्हील के आकार के पहिये प्रत्येक लाइन में लगे हैं जो कि बचे हुए खरपतवार नष्ट करने में सहायक होते हैं. दूसरे प्रकार के वीडर में कुलपा या बक्खर ब्लेड लगे हुए जो कि खरपतवार नष्ट करते हैं तथा खेत में नमी सुरक्षित रखते हैं. इसके साथ-साथ प्रत्येक लाइन में स्टार व्हील लगे हुए हैं जो कि ट्रैक्टर पीटीओ से चलते हैं तथा ढेले तोड़ने, खरपतवार नष्ट करने में सहायक होते हैं.

हस्त चलित वीडर - यह बनावट के अनुसार कई प्रकार के होते हैं. इसमें मुख्य पेग टाइप ड्राईहैंड वीडर, व्हील हो आदि प्रचलित हैं. इसमें ब्लेड के रूप में काली मिट्टी में स्वीप का ही प्रयोग किया जाता है जो कि सोयाबीन के बीच की लाईनों में खरपतवार नष्ट करते हैं तथा खेत में नमी सुरक्षित रखते हैं.

सोयाबीन में नींदाओं को खत्म करने के लिये नींदानाशक

नींदा	नींदानाशक	सक्रिय तत्व मात्रा (ग्राम/हे.)	व्यापारिक मात्रा (ग्राम/हे.)	छिड़काव समय	विशेषता
सकरी पत्ती	एलाक्लोर	1500-2000	3000-4000	बोनी के 3 दिन के अंदर	सकरी एवं कुछ चौड़ी पत्ती वाले नींदाओं के नियंत्रण हेतु.
	मेटलाक्लोर	1500-2000	3000-4000	बोनी के 3 दिन के अंदर	सकरी एवं कुछ चौड़ी पत्ती वाले नींदाओं के नियंत्रण हेतु.
	आक्साडायजॉन	500	2000	बोनी के 3 दिन के अंदर या 15 दिन बाद	सकरी एवं कुछ चौड़ी पत्ती वाले नींदाओं के नियंत्रण हेतु.
	पेन्डीमिथालीन	750-1000	2500-3000	बोनी के 3 दिन के अंदर	सकरी एवं कुछ चौड़ी पत्ती वाले नींदाओं के नियंत्रण हेतु.
	मेट्रीब्यूजीन	350-500	500-700	बोनी के 3 दिन के अंदर	सकरी एवं कुछ नींदानाशक चौड़ी पत्ती वाले नींदाओं के नियंत्रण हेतु.
	क्यूजॉलोफाप	40-50	820-1000	बोनी के 15-20	केवल सकरी पत्ती वाले नींदाओं के नियंत्रण हेतु.
	फेनाक्साप्राप	80-100	800-1000	बोनी के 20-25	सकरी पत्ती वाले नींदाओं के नियंत्रण हेतु.
चौड़ी पत्ती	एमाइजेथापर	100	1000	बोनी के 15 दिन बाद	केवल चौड़ी पत्ती वाले नींदाओं के नियंत्रण हेतु.
	मेटासल्फूरान	4-6	16-24	बोनी के 15-20 दिन बाद	चौड़ी पत्ती वाले नींदाओं के नियंत्रण हेतु.
	क्लोरिम्यूरॉन	8	12	बोनी के 15-20 दिन बाद	चौड़ी पत्ती वाले नींदाओं के नियंत्रण हेतु.

नोट : सभी नींदानाशकों को 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव सारणी में दिये अनुसार करना चाहिए.

किसान काल सेन्टर फोन नम्बर 18002334433 पर नि: शुल्क फोन करें, खेती की समस्याएं सुलझाएं

आत्मा संदेश पढ़ें, सबको पढ़ाएं

किसान मित्रो और दीदियो,

आपको हर माह आत्मा संदेश मिलेगा. इसके माध्यम से किसान भाई- बहनों को खेती किसानी के आधुनिक तरीकों की जानकारी दी जाएगी. उनका उपयोग कर, उत्पादन बढ़ाकर वे अपनी आय बढ़ा सकते हैं. आत्मा संदेश में प्रकाशित जानकारी का ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाने और कृषि तकनीक के प्रति जागरुकता फैलाने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी आप पर है.

क्या करें.

1. आप शाम की चौपाल में ग्रामवासियों की बैठक को आयोजित कर आत्मा संदेश का सामूहिक वाचन करें.
2. आत्मा संदेश के प्रत्येक अंक की फाईल बनायें और इसे मोटे गत्ते की जिल्द चढ़ाकर सुरक्षित रखें.
3. चौपाल में आत्मा संदेश को सभी के लिए अवलोकनार्थ रखें. इसके बारे में किसानों को भी जानकारी दें.
4. आत्मा संदेश की एक प्रति का प्रदर्शन सार्वजनिक नोटिस बोर्ड पर चस्पा कर किया जा सकता है.

-संपादक

सामयिक खेती

खरीफ में लगायें तिल

प्रदेश के कई भागों में अच्छी वर्षा हो गई है वहां सोयाबीन की बुआई की जा रही है. कम वर्षा वाले क्षेत्रों के लिए खरीफ तिल, बाजरा तथा लघु धान्यों को उन क्षेत्रों में लगाया जाना चाहिए ताकि अच्छा उत्पादन मिल सके.

उन्नत किस्में : जे.टी.21, टी.के.जी.22, टी.के.जी. 55, जे.टी.एस.8, टी.के.जी. 306, जे.टी.1 को उपयोग में लाना चाहिए.

मात्रा व बीजोपचार- तिल का 5-6 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करना चाहिए. बीज बुवाई से पूर्व कार्बेन्डाजिम की 2 ग्राम मात्रा प्रति कि.ग्रा. के हिसाब से उपचारित करना चाहिए. बोनी कतारों में करना चाहिए. कतार से कतार की दूरी 12 इंच व पौधे से पौधे की दूरी 4 इंच रखने से उपयुक्त पौध संख्या 3 लाख प्रति हे. होती है.

संतुलित उर्वरक उपयोग - तिल के अच्छे उत्पादन हेतु यूरिया 87 कि.ग्रा., सिंगल सुपर फास्फेट 375 कि.ग्रा., म्यूरेट आफ पोटाश 34 कि.ग्रा. व गंधक 20 कि.ग्रा. आवश्यक है. फास्फोरस, पोटाश की पूरी मात्रा व यूरिया की आधी मात्रा आधार खाद के रूप में देते हैं नत्रजन की शेष मात्रा को दो बार में टॉप ड्रेसिंग के रूप में 30 व 45 दिनों बाद देना चाहिए. जहां तक संभव हो फास्फोरस की पूर्ति सिंगल सुपर फास्फेट के माध्यम से करना चाहिए क्योंकि इससे फॉस्फोरस के साथ-साथ सल्फर व अन्य पोषक तत्व पहुंच जाते हैं.

कटाई, गहाई व उपज- पत्तियां पीली होकर झड़ने लगे तथा फलियाँ हरी हों तभी तिल की कटाई का सही समय है. कटी फसल को लकड़ी के सहारे सीधा रखकर अच्छी तरह सुखायें. सूखे पौधों को छड़ियों से पीटकर गहाई करें. बीज को धूप में अच्छी तरह सुखाकर सुरक्षित भंडारण करें.

खेतों में भली भांति कार्य करने से तथा उन्नत सस्य क्रियाएं व पौध संरक्षण विधियों को अपनाने पर 7-9 क्विंटल तिल का उत्पादन प्रति हेक्टेयर होता है .

अब आ गया कोदो, कुटकी लगाने का समय

कोदो - जवाहर कोदो-41, जवाहर कोदो-364, जावहर कोदो-62, जावहर कोदो 439, जवाहर कोदो-48, जवाहर कोदो-147, जवाहर कोदो-76.

कुटकी - जवाहर कुटकी-8, को-2, को-3.

रागी - आरएयू-8, व्ही.एल. 317, जे.एन.आर. 1008.

बीज की मात्रा- कतार बुवाई के लिए 8 से 10 किलो प्रति हेक्टेयर, कोदो, रागी एवं सावां को 87 किलो यूरिया, 135 किलो सिंगल सुपर फास्फेट तथा 17 किलो म्यूरेट आफ पोटाश अवश्य दें.

निंदाई -गुड़ाई- निंदाई गुड़ाई का लघु इन फसलों की उपज पर विशेष प्रभाव पड़ता है. बोनी के लगभग 30वें एवं 50वें दिन निंदाई-गुड़ाई अवश्य करना चाहिए. जहां पौधे न उगे हों वहां अधिक घने स्थान से निकालकर बुवाई से 15 से 25 दिन के अन्दर बरसते पानी में रोपाई करें.

बाजरा कम वर्षा वाले क्षेत्रों के लिये वरदान है.

भूमि- सामान्य उपजाऊ भूमि में भी अच्छा हो जाता है.

जातियां - पी.एस.बी. 25, बी.के. 250, विजय, डब्ल्यू सी.सी. 75, आर.एच.आर. 75, आर.एच.आर.1.

बीज मात्रा-5 किलो/हे. बीज, पौध संख्या पौने दो से 2 लाख के लिये बीजोपचार 2 ग्राम थाईरम/किलो बीज का करें.

बुआई- जून के आखिरी सप्ताह से जुलाई के द्वितीय सप्ताह तक पौध से पौध 15 से.मी. तथा कतार से कतार 45 से.मी. रखें.

उर्वरक - यूरिया 87 किलो, सिंगल सुपर फास्फेट 250 किलो तथा म्यूरेट ऑफ पोटाश 17 किलो/हे.

एक एकड़ में 72 टन टमाटर

इलेक्ट्रानिक इंजीनियर ने सिद्ध किया, तकनीकी में है दम

कामयाबी की कहानी

अनिमेष शर्मा

मेहनत, लगन, दूरदृष्टि के साथ तकनीकी के मिश्रण से खेती को सिर्फ लाभकारी ही नहीं बनाया जा सकता बल्कि अन्य व्यवसायों की तुलना में भी बेहतर परिणाम लिये जा सकते हैं. इलेक्ट्रानिक्स इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करने के बाद किसान बने इन्दौर जिले के ओंकारेश्वर रोड पर स्थित एक छोटे से गांव पंडाली के युवक अनिमेष शर्मा ने पांच साल पहले खेती करना शुरू कर उत्तरोत्तर उपलब्धियां हासिल की.

रिवर्स केलकुलेशन टेक्निक : नये प्रयोग करना और लक्ष्य तय कर, उत्पादन प्राप्त करने की लगन इन पर हमेशा हावी रहती है. अनिमेष इसे रिवर्स केलकुलेशन टेक्निक कहते हैं जिसमें उत्पादन का पूर्वानुमान लगाकर यथानुसार लागत प्रबंधन किया जाता है.

कृषि अधिकारियों की सलाह : अनिमेष, कृषि अधिकारियों की सलाह अनुसार ग्रीष्मकाल में धरती को आराम देते हैं. केवल गहरी जुताई कर खेत खाली छोड़ने से कीट, बीमारी और कई समस्याओं का प्राकृतिक निदान हो जाता है. अक्टूबर-नवम्बर में वे टमाटर की खेती करते हैं. इसके लिए नर्सरी पहले से तैयार कर ली जाती है. खास किस्म के कपों में हाथ से एक-एक कर बीज बोये जाते हैं. इन कपों में मिट्टी की जगह नारियल से बना कल्चर होता है. इनमें बीज को लगाने से शत-प्रतिशत बीजों का अंकुरण होता है. ग्रीन हाउस में अंकुरित पौधों को लगभग एक माह तक ट्रे में रखा जाता है. बीज बोने से पहले ट्राइकोडर्मा विरडी से बीजोपचार करते हैं.

मल्चिंग शीट का प्रयोग : पौधों को खेत पर लगाने के लिए पॉलीथिन की मल्चिंग शीट का प्रयोग किया जाता है जिससे पौधे न केवल कीट-व्याधियों से सुरक्षित रहते हैं बल्कि पानी की भी भरपूर बचत होती है.

सिंचाई के लिए ड्रिप : अनिमेष ड्रिप पद्धति का प्रयोग कर जड़ों के नजदीक से बूंद-बूंद पानी पौधों को देते हैं. इसके साथ ही वे रसायनिक उर्वरक और अन्य सहायक सामग्री भी जड़ों तक पहुंचा देते हैं. पौधे से पौधे की दूरी 2 फिट और कतार से कतार की दूरी लगभग 6 फिट रखते हैं. इनके पौधे लगभग 6 फिट ऊंचाई तक जाते हैं इसलिए उन्हें सहारा देकर बांधना बहुत जरूरी होता है. इस तरह से टमाटर की अधिकतम उपज उन्होंने हर साल प्राप्त की है. अनिमेष 42 एकड़ रकबे में ड्रिप पद्धति से सिंचाई करते हैं तथा 30 एकड़ भूमि में उन्होंने मल्चिंग का प्रयोग किया है.

100 टन प्रति एकड़ का लक्ष्य : अनिमेष शर्मा अभी भी इस उपलब्धि को कम मानते हैं. उनका लक्ष्य अब प्रति एकड़ 100 टन उत्पादन को छूना है.

पशुपालन

बरसात में पशुओं की देखरेख

टीकाकरण करायें - बरसात आने से पहले जहरबाध रोग विरोधी टीका, लंगड़ा बुखार (ब्लॉक क्वार्टर) रोग विरोधी टीका, खुरपका-मुंहपका तथा गलघोंटू रोग विरोधी टीका अनुभवी पशुओं के डाक्टर द्वारा लगवाये. इससे पशुओं के शरीर में इन रोगों के विरूद्ध प्रतिकारक ताकत पैदा होगी और वे इन रोगों का शिकार नहीं होंगे.

कृमि नाशक दवा पिलायें- बरसात में कई तरह के कृमि पशुओं के पेट में प्रवेश कर जाते हैं जो उनका खून चूसकर कई रोग पैदा करते हैं. इससे पशुओं का दूध उत्पादन कम हो जाता हैं. अत: उनकी रोकथाम के लिये अलबेंडझॉल या थाईबेडझॉल जैसी कृमिनाशक दवायें पशुओं को निर्देशानुसार पिलायें.

कीड़ों का नाश- बरसात में मौजूद उमस भरा वातावरण कीट जैसे लीचड़, गौमक्खी, पिस्सू आदि के बढ़वार में सहायक होने से उनका प्रकोप बढ़ता हैं. वे पशुओं में बैचेनी, झुंझलाहट, खुजली आदि के अलावा उनका खून चूसकर उन्हें कमजोर भी बनाते है. पशुओं का चारा खाना, जुगाली कम होकर उनका दूध कम होता हैं.

गौशाला- जहां तक हो सके पशुओं को भारी बरसात से बचायें. बरसात से पूर्व बाड़े की मरम्मत करवायें. बाड़ों में बरसात का पानी नहीं रिसना चाहिए. ऐसी व्यवस्था करें. नालियों, गटर की सफाई करवाये ताकि पानी की निकासी ठीक से हो जाये. घास-फूस की छत पर पॉलीथिन लगायें. पशुओं को सूखे बाड़े में रखें. संकर पशुओं को कीचड़ से बचायें.

चारा - बरसात में पशुओं के पोषण का विशेष ध्यान रखें. उन्हें ज्यादा मात्रा में हरा चारा न खिलायें. अन्यथा आफरा, पेचिश, बदहजमी जैसी शिकायत हो सकती हैं. 60 प्रतिशत हरा चारा तथा 40 प्रतिशत सूखा चारा इसी अनुपात में आहार दें. खनिज ईंट बाड़े में रखें.

पानी - बरसात में पशुओं को साफ पानी पिलायें. पानी की टंकियाँ खाली कर उन्हें कलई के चूने से पुताई करें. सूखने पर साफ पानी भरें. पानी में फिटकरी घुमायें. लाल दवा (पोटेशियम परमेगनेट) के कुछ कण पानी में डालें. या क्लोरीन पाउडर निर्देशानुसार डालें. बाहर का गंदे नाले का मटमैला पानी पशुओं को न पिलायें अन्यथा संक्रमण होकर पशु बीमार हो सकते हैं.

जैविक खेती

धान में नीली हरी काई का उपयोग

- नीली हरी काई का उपयोग धान में नत्रजन याने नाइट्रोजन के विकल्प के रूप में उपयोग किया जाता है.
- इसके उपयोग से फसल को 20-40 किलो ग्राम नत्रजन प्रति हेक्टर की दर से प्राप्त हो सकता है.
- ये काई वायुमंडल से नत्रजन का शोषण करके पौधों को उपलब्ध कराती है.
- इसके उपयोग से यूरिया पर होने वाले खर्च को बचाया जा सकता है तथा मिट्टी के भौतिक गुणों में सुधार आता है.
- इसका उपयोग पानी से 6-8 इंच भरे खेत में करना जरूरी है.
- इसका उपयोग रोपाई, निंदाई के एक सप्ताह बाद करना चाहिए.
- काई के उपयोग के बाद एक खेत का पानी दूसरे खेत में नहीं जाने देना चाहिए.
- एक हेक्टर क्षेत्र के लिए 10 किलो नीली हरी काई का सूखा चूर्ण पर्याप्त होगा.

काई से लाभ :

- वायुमण्डल से नत्रजन स्थापित करने के कारण पौधों की वृद्धि अच्छी होती है.
- मिट्टी को उपलब्ध अघुलनशील फास्फेट घुलनशील हो जाते हैं.
- क्षारीय भूमि में सुधार आता है.
- खरीफ में इसके उपयोग का लाभ रबी फसल को भी मिलता है.
- धान की फसल में 10-15 प्रतिशत अतिरिक्त उत्पादन प्राप्त होता है.

आर्थिक पहलू

- नीली हरी काई का उत्पादन खर्च प्रति हेक्टेयर - 62 रुपए.
- नीली हरी काई से 20-40 किग्रा. नत्रजन की बचत प्रति हेक्टेयर = 200-500 रुपये तक.
- धान की उपज में 3-4 क्विंटल की वृद्धि (प्रति हे.) = 1200-1600 रुपये तक.
- शुद्ध लाभ प्रति हेक्टेयर 1300-2000 रु.

जुलाई में किसान भाई क्या करें

फसल उत्पादन

- खरीफ फसलों की बुवाई भूमि में पर्याप्त नमी देखने के बाद ही शुरू करें ताकि अंकुरण संतोषजनक हो.
- सोयाबीन के साथ मक्का, ज्वार तथा मूंग की अंतरवर्तीय फसल सफलता से ली जा सकती है.
- आमतौर पर 4 इंच वर्षा हो जाने के बाद ही बुवाई की जाना चाहिए.
- सभी प्रकार के बीजों का बीजोपचार आवश्यक रूप से 3 ग्राम थाइरम प्रति किलो बीज के हिसाब से करें.
- गहरी काली मिट्टी में प्रत्येक 18-20 कतार के बाद एक कतार खाली रखें जिसका उपयोग अतिरिक्त जल का निथार, पौध संरक्षण तथा जीवन रक्षक सिंचाई के लिए किया जाए.
- धान की नर्सरी से 20-25 दिन की अवस्था वाली पौध निकाल कर मुख्य खेत में लगाएं ध्यान रहे एक स्थान पर दो-तीन से ज्यादा पौध न लगाएं.

- समय-समय पर निंदाई-गुड़ाई कार्य करते रहें.
- धान की कतार बुआई के लिये भूमि में पर्याप्त नमी होने के बाद 50 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से बुआई करें. कतार से कतार की दूरी 20-25 सेमी. रखें.
- वर्षा शुरू होते ही तिल की बुवाई भी की जा सकती है. 4-5 किलो बीज के साथ 30 से.मी. कतार से कतार दूरी रखें.
- सोयाबीन के बीज में फफूंदनाशी बीजोपचार के बाद रायजोबियम तथा पीएसबी कल्चर का प्रयोग भी करें.
- गंधक तथा जस्ते की कमी वाले खेतों में जिंक सल्फेट उपयोग करें.
- अंकुरण उपरांत सोयाबीन की फसल में निरीक्षण जारी रखें तथा कोपलों की रक्षा करें.

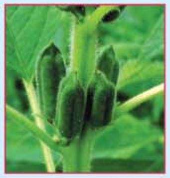

उद्यानिकी

- आम, अमरूद, अनार, नींबू के पौधे तैयार करके गड्ढों में लगायें.
- आंवला तथा बेर में बडिंग करें.
- रखरखाव के तहत उचित खाद एवं उर्वरक प्रदान करें.
- टमाटर, बैंगन तथा अगेती गोभी के पौधों को मुख्य खेतों में रोपें.
- सभी प्रकार की सब्जियों में कीट रोग नियंत्रण का उपाय करें.
- फूल पौधों में उर्वरक दें.

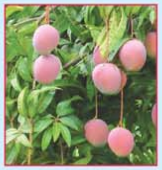

पशुपालन

- बकरियों को सीसीपीसी का टीका लगायें.
- पशुओं के लिए हरे चारे की व्यवस्था के लिए ज्वार, मक्का, लोबिया लगायें.

अन्य

- वर्षा के कारण जहरीले जंतु अपने बिलों से निकलकर बाहर आते हैं. ऐसी कुछ घटना होने की संभावना से उपचार की व्यवस्था करें.
- पानी दो परत वाले कपड़े से छान कर बनते कोशिश उबाल कर पियें.
- ग्रीष्मकालीन में बनाये गये अचार, पापड़ तथा अनाज की सुरक्षा करें.

विभाग की अनुदान योजनाओं का लाभ लेने के लिए अपने क्षेत्र के ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी से सम्पर्क करें.